Raga of the Month December, 2020

रागांग केदार

आज हम **रागांग** केदार की चर्चा करेंगे और केदार, जो **रागांग राग** माना जाता है, उसके स्वरूप के बारे में जानकारी लेंगे। प्राचीन काल में (ध्रुवपद शैलीमें) राग केदार का जो स्वरूप हमें मिलता है, उसमें ज्यादहतर शुद्ध मध्यम का प्रयोग होता था और तीव्र मध्यमका, बिल्कुल नहीं के बराबर या विवादी के रूप में, प्रयोग होता था। शुद्ध मध्यमयुक्त केदारका वर्गीकरण बिलावल थाटमे किया गया था। परन्तु वर्तमान कालमे प्रचलित जो केदार राग हमें देखने मिलता है वह दो मध्यम युक्त है और उसे कल्याण थाट में माना जाता है।

राग केदार का स्वरूप इस प्रकार है:
आरोह- सा रे सा , म , म ^{ग}प, ध नि सां; अवरोह- सां नि ध प , मं प म , रे सा
पकड - सा रे सा म , म (प) म , रे सा; वादी - मध्यम, संवादी - षड्ज
पूर्वांग प्रधान; गानेका समय - रात्रि का प्रथम प्रहर.
रागांग वाचक प्रमुख स्वर समूह :
सा रे सा म, म ^{ग}प, मं प ध नि ध प मं प ध $^{पमं}$ म, प प सां, सां रें सां, मं मं रें सां, मं प ध प म, प म, रे सा.
इस राग में स्वरों का प्रयोग एवं महत्व जान लेंगे।
षड्ज- संवादी तथा न्यास बहुत्व;
ऋषभ- आरोहमें वर्जित , अनाभ्यास , म रे सा;
गांधार- वर्ज्य, मगर स्पर्श के रूप में प्रयोग, म ^{ग}प;
शुद्ध मध्यम - वादी स्वर, न्यास बहुत्व, सा रे सा म, म म प म, मं प ध नि सां ध प मं (प) म;
तीव्र मध्यम - शुद्ध मध्यम और पंचम स्वर के मध्यमें केंद्रित मं प ध मं प (प) $^{मं}$म, प $^{मं}$ म;
पंचम- पूर्ण न्यास, सा म म प, मं प ध प , म म प, क्वचित लंघन अल्पत्व ध $^{मं}$ म;
धैवत- अनाभ्यास अल्पत्व, मं प ध नि सां, सां नि ध प; लंघन अल्पत्व प प सां;
कोमल निषाद- अल्प प्रमाणमें धैवतके साथ अवरोह में प्रयोग, सां ध <u>नि</u> ध प, मं प ध <u>नि</u> ध प
शुद्ध निषाद - अनाभ्यास अल्पत्व, मं प ध नि सां, सां नि ध प.

"क्रमिक पुस्तक मालिका"और **"संगीत शास्त्र"में** उस समयमें प्रचलित निम्नलिखित केदारप्रकारोंका वर्णन किया है। शुद्धमध्यमयुक्त केदार, जलधर केदार, मलुहा केदार और चांदनी केदार.
वर्तमान समयमें केदार रागके रागांगवाचक स्वर समूहके आधारपर केदारके विभिन्न प्रकारोंकी रचना की गयी है- जैसे -
{ जिस रागका मिश्रण केदार रागके साथ किया है उस रागका नाम ऐसे कोष्ठकमें ( ) दिया है **}**
आडंबरी केदार (शंकरा); बसंतीकेदार ; नटकेदार ;दीपककेदार; दुर्गाकिदार; हमीर केदार; केदार भंखार; शिव केदार; श्याम केदार; तिलक केदार; केदारमल्हार; केदारभैरव; कुसुमकेदार; मारवाकेदार; मारुकेदार; संपूर्ण केदार; केदारबहार; सुधा केदार (यमन -विदुषी पद्मा देशपांडे निर्मित); सावनी केदार (मियां मल्हार- आचार्य श्री ना रातंजनकर निर्मित; संगम केदार रागमे राग नन्द और केदारका मिश्रण दीखता है-"संगीत कला प्रकाश" किताबमें गायनाचार्य पंडित रामकृष्ण बुवा वझेजीने इस रागका वर्णन किया है; इसी स्वरूपका (राग नन्द और केदार का) मिश्रण पंडित कुमार गंधर्वजीने नंदकेदार नामसे गाया है ; उपरोक्त सभी रागों के गायनके नमूने www.oceanofragas.com संकेत स्थलपर उपलब्ध है।

आज हम (i) राग शुद्ध मध्यमयुक्त केदारका और सावनीकेदारका पंडित के जी गिंडेजीने लेक्चर डेमोमे किया हुआ विवरण और बंदिश; तथा (ii)संगम केदार जो *पंडित केदार बोडसजीने गाया है ; और (iii) मलुहा केदार उस्ताद यूनुस हुसैन खां साहबने गाया हुआ सुनेंगे।

* पंडित केदार बोडस- जिनका जन्म संगीतसे जुड़े हुए घराने में हुआ है, संगीतकी शिक्षा उन्होंने अपने दादा पंडित लक्ष्मणराव बोडस (जो पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्करजी के शिष्य थे), तथा पिता नारायण राव बोडस और अन्य संगीतज्ञोंसे प्राप्त की है जैसे डॉ. अशोक दा रानडे, पं सी पी रेळे , पं त्र्यंबकराव जानोरीकर और पंडित भालचंद्र पेंढारकर।
{आभार प्रदर्शन -क्रमिक पुस्तक मालिका और संगीत शास्त्र; अभिनव गीतांजली -पं रामाश्रेय झा, श्री अजय गिंडे ; पं . यशवंत महाले }

०१-१२-२०२०